

B. A. II Psychology (Subsidiary.)

Teacher - A. K. Sinha

classmate

Date

Page

Topic - Mental conflicts (मानसिक संघर्ष)

आधुनिक युग में अधिकांश व्यक्ति मानसिक संघर्षों के शिकार होने रहते हैं क्योंकि आज का युग गौतमवादी युग हो गया है। मानसिक संघर्षों की स्थिति अब उत्पन्न होने लगी है, जब-जब दो या दो से अधिक विरोधी इच्छाएँ या प्रवृत्तियाँ एक ही आत्मा अपनी संतुष्टि चाहती हैं। इस स्थिति में परस्पर विरोधी प्रवृत्तियाँ एक-दूसरे की संतुष्टि में बाधा उत्पन्न करती हैं जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति अपनी आत्मके मानसिक संघर्षों की स्थिति में पाता है या शिकार हो जाता है। मनोवैज्ञानिक जेम्स डुविरेकोवॉ के अनुसार मानव जीवन का प्रारम्भ ही जीवन और मृत्यु की प्रवृत्तियों के पारस्परिक संघर्ष से होता है लाभ ही लाभ जीवन प्रयत्न चलता रहता है। मानसिक संघर्षों की यह स्थिति मन की गल्फाल्ड शक्तियों (Id, Ego and Super Ego) के बीच-बैतन, ऊर्ध्व-बैतन तथा अधो-बैतन वीरों-वैरों पर चलती रहती है। मानव व्यवहार उन्हीं संघर्षों की उत्पत्ति होती है। मानसिक संघर्षों की परिभाषा अलग-अलग मनो-वैज्ञानिकों ने अपने-अपने ढंग से दी है।

Living Langfield and Weld ने 1962 परिभाषित करते हुए कहा है कि, "... a state of affairs in which two or more than two behaviour trends are evoked that cannot be satisfied fully at the same time."

अपने Brown SRT मानसिक संघर्ष की

परिभाषा इस प्रकार की है -  
"By Conflict The Psycho-analysis means a situation in which two wishes so compatible that one would preclude the fulfilment of the other."

अधिक दो चीजों परीक्षाओं के अंतर्गत के परस्पर विरोध के रूप में कहा जा सकता है कि मानसिक संघर्ष में मुख्य रूप से चार प्रकार की संघर्ष होते हैं। (i) दो या दो से अधिक इच्छाओं का एक ही सामान्य उद्देश्य होना। (ii) ये इच्छाएँ या प्रवृत्तियाँ परस्पर विरोधी प्रकृति के हों। (iii) इस परिस्थिति में एक के पक्ष में निर्णय लेना कठिनाई का अनुभव होना। (iv) परीक्षा के रूप में मानसिक संघर्ष का होना।

इसी वर्षों के आलोचक में Page महोदय ने मानसिक संतुलन की स्थिति को स्पष्ट करते हुए कहा है कि -

"Individuals state of indecision as to which of the two antagonistic motives satisfied, destroys the mental equilibrium and gives rise to conflict."

इसके कथन का अभिप्राय है कि जब दो विरोधी प्रेरकों के अभाव में कोई एक किसे संतुलन बनाए रखे यह निर्णय करना कठिनाई हो तो मानसिक संघर्ष उत्पन्न हो जाता है।